REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों के मध्य कक्षीय वातावरण से कार्यसंतुष्टि का अध्ययन

डॉ सुधीर सुदाम कावरे[1] , कविता विशाल[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपूर, छत्तीसगढ.

प्रस्तावणा

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य का चहुॅमुखी व सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। शिक्षा मनुष्य को मानसिक व वैचारिक परिपक्वता प्रदान करता है जिससे मानव आसानी से अपने जीवन की कठिन परिस्थितीयों मे समायोजित होना सीखाता है। व्यक्ति को सिखाने या शिक्षित करन में शिक्षक सशक्त तथा प्रमुख भूमिका निभाता है। शिक्षक को सभ्य तथा जिम्मेदार समाज निर्माता की भूमिका प्राप्त है और शिक्षक यह भूमिका अच्छी प्रकार से तभी निभा सकता है जब वह अपने कार्य व व्यवसाय से संतुष्ट हो।

वर्तमान समय में आये दिन अखबारों में शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति बुरा, बर्बर, अनुचित तथा निंदनीय व्यवहार सुर्खियॉ बन कर छप रही हैं तथा इस व्यवसाय को कलंकित कर इसकी प्रतिष्ठा को धुमिल कर रहे है जिसे पढकर दुख तथा आश्चर्य होता है कि विद्यार्थियों को धैर्य तथा सहनशीलता, सदभाव जैसे सदगुण सिखाने वाले शिक्षक स्वयं ऐसा व्यवहार अपना रहे हैं जिससे उनके प्रति मन में अविश्वास की भावना घर करने लगी है तथा मन में यह प्रश्न उठने लगा है कि कही इस हिंसात्मक व्यवहार का कारण अपने कार्य के प्रति असंतुष्टि तथा कार्य स्थल का वातावरण तो नहीं जिसे वे अपने इस आक्रोश को हिंसा के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

कार्य संतुष्टि

कार्य संतुष्टि वह भावना है जिसे हम किसी कार्य या व्यवसाय को करन पर महसूस करते है जैसे किसी संगीतकार को संगीत से, लेखक को लेखन से, चित्रकार को चित्रकारी से संतुष्टि मिलती है वैसे ही किसी वृत्ति या पेशे को करने पर मिलने वाली संतुष्टि या व्यावसायिक संतुष्टि कहलाती है।

व्यवसाय का अर्थ किसी व्यक्ति की जीवन वृत्ति या जीविका के साधन से लिया जाता है। सामान्य रूप से व्यक्ति अपने जीवन यापन के लिए किसी न किसी व्यवसाय या कार्य को अपनाता है जिसमें उसकी रूचि होती है। यदि जिस व्यवसाय को वह अपनाता है उसमें वह निष्पक्षता और योग्यता के साथ ही सफलता प्राप्त कर लेता है तथा उसके जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति उसके माध्यम से होती है, तो वह संतुष्टि का अनुभव करता है। व्यावसायिक या कार्य संतुष्टि के लिए यह जरूरी है कि व्यवसाय या कार्य उसकी रूचि का हो।

"कार्य संतोष उन विविध मनोवृत्तियों का परिणाम है जिन्हें कर्मचारी अपने व्यवसाय के संबंधकारों तथा संपूर्ण जीवन के प्रति बनाये रखता है।" – ब्लूम एव नायलार

"Job-satisfaction may be defined as a pleasurable or positive emotional state resulting from the appraisal of one's Job or Job experience". –Locke

कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कारक

रूचि

किसी भी कार्य को करने में रूचि का सर्वाधिक महत्व होता है। जिस कार्य में व्यक्ति की रूचि होती है उसे वह प्रसन्नतापूर्वक करता हैं व्यक्ति को यदि बागवानी में रूचि है और उसे यदि मशीन का कार्य करन को कहा जाये या चित्रकार को यदि वकील का काम करन को कहा जाये तो वह उस कार्य को अरूचि से करेगा और असंतुष्ट रहेगा और यदि उसे उसकी रूचि के अनुरूप काम करने के लिए दिया जाये तो वह मेहनत लगन व तत्परता से काम करेगा और अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करेगा और अपने को पूर्ण अभिव्यक्त कर पायेगा । इसी बात को मैस्लो (1954) कहते है।

"एक संगीतकार द्वारा संगीत की साधना की जानी चाहिए, एक चित्रकार द्वारा चित्रकारी की जानी चाहिए एक कवि द्वारा कविता लिखी जानी चाहिए। एक व्यक्ति जो कुछ हो सकता है उसे वह होना चाहिए"।

प्रतिष्ठा

वर्तमान में प्रतिष्ठा कार्य संतुष्टि में प्रमुख भूमिका निभा रही है। हर व्यक्ति की आंतरिक इच्छा होती है कि समाज मे उसे सम्मान और प्रतिष्ठा मिले। इसलिए व्यक्ति कभी–कभी आय कम होने तथा प्रतिष्ठा अधिक होने पर भी किसी कार्य को सहर्ष करने को तैयार हो जाते है क्योंकि प्रतिष्ठा से उन्हे संतुष्टि मिलती है और कभी–कभी कार्य में आय अधिक किंतु प्रतिष्ठा कम हो तो व्यक्ति संतुष्टि का अनुभव नहीं करता।

उन्नति के अवसर

व्यक्ति जिस व्यवसाय को कर रहा है उसमें भविष्य में उन्नति के अवसर है या नहीं इस पर भी कार्य संतुष्टि निर्भर करती है यदि उसे महत्वकांक्षा पूर्ति के अवसर मिलेंगे तो वह प्रसन्नता से अपने व्यवसाय में जुटेगा और संतोष का अनुभव करेगा।

आय

किसी व्यवसाय या कार्य से होने वाली आय सबसे प्रभावशाली तत्व होता है संतुष्टि का। कभी–कभी कार्य रूचि का हाने पर भी यदि आय समुचित या इच्छानुसार न हो तो वह कभी संतुष्ट नहीं हो सकता क्योंकि आय एक ऐसा तत्व है जो उसके ही नहीं उसके परिवार को भी प्रभावित करता है।

सुरक्षा की भावना

यदि कार्य में या व्यवसाय में सुरक्षा की भावना नहीं होगी तो वह संतुष्ट नहीं हो पायेगा क्योंकि हमेशा वह इसी चिंता में रहेगा कि मैं जिस कार्य को कर रहा हूँ क्या वह मुझे आगे सुरक्षा प्रदान करेगा ? यह सुरक्षा भावना आय की हो या पद से संबंधित कोई भी व्यक्ति बिना सुरक्षा के जाखिम उठाना नहीं चाहता।

कक्षिय वातावरण और कार्यसंतुष्टि

कक्षा का वातावरण शिक्षण आधिगम प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि संपूर्ण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया कक्षा के अंदर ही संपन्न होती है। ऐसे में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया सुचारू रूप से संपन्न हो सके इसके लिए आवश्यकता है कि कक्षा का वातावरण इसके अनुकूल हो। कक्षीय वातावरण के अंतर्गत न केवल भौतिक वातावरण जैसे की बैठक व्यवस्था, कमरों का सही आकार, मूलभूत आवश्यक शिक्षण सामग्री, विद्यार्थियों का अनुशासन, अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों की सक्रियता, विद्यार्थी शिक्षक के बीच आवश्यक सकारात्मक संचार, विद्यार्थियों के रूचि के अनुरूप शिक्षण, शिक्षक–विद्यार्थियों के बीच सौहार्द पूर्ण संबंध आते है। प्राकृतिक वातावरण के अंतर्गत उचित रोशनी एवं हवा की व्यवस्था आती है। यदि कक्षा का वातावरण बोझिल रहेगा, विद्यार्थी निष्क्रिय रहेंगे, अनुशासन हीनता होगी, शिक्षण प्रक्रिया एकतरफा रहेगी, शिक्षक द्वारा प्रात्साहन का अभाव रहेगा, उचित हवा और रोशनी की व्यवस्था नहीं होगी तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उबाऊ और बोझिल बन जायेगी जिसका उददेश्य शिक्षक द्वारा केवल पाठयक्रम को पूर्ण करवाना रह जायेगा तथा शिक्षक विद्यार्थी को पढने और पढाने में रूचि नहीं रह जायेगी और शिक्षक को संतुष्टि का अनुभव नहीं होगा।

कक्षा के अच्छे वातावरण में शिक्षक अपना कार्य अच्छे से सम्पन्न कर पायेगा और संतुष्टि का अनुभव करेगा। अतः कक्षा का वातावरण भी व्यावसायिक या कार्य संतुष्टि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

अध्ययन के उददेश्य

1 शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का कक्षिय वातावरण और कार्य संतुष्टि के सह संबंधो का अध्ययन करना।
4 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यायल के शिक्षकों का कक्षिय वातावरण और कार्य संतुष्टि के सह संबंधो का अध्ययन करना।

परिकल्पना

1 शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
2 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
3 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का कक्षिय वातावरण और कार्य संतुष्टि में सार्थक सह संबंध नहीं पाया जायेगा।
4 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का कक्षिय वातावरण और कार्य संतुष्टि में सार्थक सह संबंध नहीं पाया जायेगा।

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

रितु बक्शी (2012) द्वारा अशासकीय शिक्षकों का कार्य संतुष्टि एवं अभिप्रेरणा के मध्य अध्ययन किया जिसमें उन्होंने दोनों को प्रभावित करने वाले कारकों के रूप में युवा लोगों के साथ कार्य, आय, व्यावसायिक सुरक्षा, शिक्षण में विविधता,विषय के प्रति रूचि, पदोन्नति, व्यवसाय, प्रतिष्ठा को शामिल किया और निष्कर्षतः पाया कि उपरोक्त कारक कार्यसंतुष्टि एवं प्रेरणा को प्रभावित करते है। दिपक शर्मा (2012) द्वारा माध्यमिक विद्यालय के शिक्षको का कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया गया है एवं निष्कर्ष पाया गया कि शासकीय विद्यालय के माध्यमिक स्तर के शासकीय व अर्ध्दशासकीय शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। संजय यादव(2011) द्वारा बिलासपुर के शासकीय माध्यमिक विद्यालयों मे अध्यापनरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया और निष्कषतः पाया की शासकीय माध्यमिक विद्यालय विद्यालय के पुरूष व महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। उन्होने यह पाया की शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा शिक्षाकर्मियों की कार्यसंतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। श्यामला साहू (2010) द्वारा शासकीय एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मध्य कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि शासकीय विद्यालयों एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के मध्य तथा शासकीय विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन में यह भी पाया कि अशासकीय विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नही है एवं शासकीय विद्यालय के पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण अभिक्षमता में कोई सह संबंध नहीं है। अत्रेयी मन्ना (2009) द्वारा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों का कार्य संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ का अध्ययन किया और पाया कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन अभिकल्प

प्रस्तुत शोध की प्रकृति इसको विवरणत्मक अनुसंधान की श्रेणी में रखती है। विवरणात्मक अथवा सर्वेक्षण संबंधी अनुसंधान शिक्षा में सबसे अधिक व्यवहार में आता है। प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के मध्य कक्षीय वातावरण से कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

छत्तीसगढ राज्य के बिलासपूर जिले में स्थित उच्चतर माध्यमिक स्तर के अशासकीय एवं शासकीय विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं का समूह प्रस्तुत शोध की जनसंख्या है। उक्त जनसंख्या से न्यादर्श चयन हेतु बिलासपूर के अंतर्गत आने वाले सभी अशासकीय एवं शासकीय विद्यालयों की जानकारी प्राप्त की गई तत्पश्चात इन विद्यालयों की यादृच्छिक या लाटरी विधि से न्यादर्श का चयन किया गया। जनसंख्या का अशासकीय एवं शासकीय स्तर के आधार पर विभाजन किया गया। इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 28 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन कीया गया। प्रस्तुत शोध में शिक्षक/शिक्षिकाओं का कक्षिय वातावरण के अंतर्गत कार्य संतुष्टि को मापने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में एकत्रित आंकडों का विश्लेषण सांख्यिकीय गणनाओं, मध्यमान, मानक विचलन, टी अनुपात एवं सह संबंध इत्यादि का प्रयोंग उददेश्योंकी आवश्यकतानुसार किया गया।

परिकल्पना–1 शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 39.71 व 2.43 है और महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन 39.28 व 2.14 है। इन दोनो समुहों के मध्यमान के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t परिक्षण किया गया है गणना उपरांत t का मान 3.54 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रताश (df) 0.05 स्तर पर सार्थक अंतर है, अतः शून्य परिकल्पना शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होगा, अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।

परिकल्पना–02–अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 35.57 व 5.79 है और महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 34.05 व 6.47 है इस दोनों समूहों के मध्यमान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणना उपरांत t मान 1.32 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रतांश (df) 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शून्य परिकल्पना अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं होगा स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना–03 शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि में सार्थक सह संबंध नहीं पाया जायेगा।

शासकीय विद्यालय के शिक्षकों के कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि के बीच गणनात्मक सह संबंध गुणांक का मान 0.59 है। गणनात्मक सह संबंध गुणांक का मान (0.59) 0.05 स्तर पर स्वतंत्रताश 12के सारणी मान (.41) से अधिक है। अतः बनाई गयी परिकल्पना शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि में सार्थक सह संबंध पाया जायेगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार कह सकते है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि के बीच सार्थक सह संबंध पाया गया है जो परिमित सामान्य धनात्मक सह संबंध है।

परिकल्पना–04 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि में सार्थक सह–संबंध नहीं पाया जायेगा।

शासकीय विद्यालय के शिक्षकों के कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि के बीच गणनात्मक सह संबंध गुणांक 0.398 है। गणनात्मक सह संबंध गुणांक का मान (0.398) 0.05 स्तर पर स्वतंत्रांश 12 के सारणी मान (0. 69) से कम है। अतः बनाई गयी परिकल्पना अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक सह संबंध नहीं पाया जायेगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार से कह सकते है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि के बीच सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया है। जो की निम्न धनात्मक सह संबंध है।

परिणाम

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मध्य कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नही पाया गया।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि के बीच सार्थक सह संबंध पाया गया है जो कि परिमित सामान्य धनात्मक सह संबंध है।
- अशासकिय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कक्षीय वातावरण और कार्य संतुष्टि के बीच सार्थक सह संबंध नहीं पाया गया है जो कि निम्न धनात्मक सह संबंध है।

व्यावसायिक संतुष्टि या कार्य संतुष्टि किसी भी व्यक्ति के विभिन्न अभिवृत्तियों का परिणाम है यह अध्ययन बताता है कि शिक्षक को विषय ज्ञान होना चाहिए जि व्यवसाय में वह है उस व्यवसाय के प्रति आस्था होनी चाहिए, उस व्यवसाय में रूचि होनी चाहिए, संस्था का वातावरण स्वस्थ होना चाहिए, सहकर्मियों में सहयोग की भावना होनी चाहिए, विद्यालय प्रगति को अपनी जिम्मेदारी माननी चाहिए अपने कार्य से आत्म संतुष्टि मिलनी चाहिए। अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करना चाहिए अपने कार्य से आत्म संतुष्टि मिलनी चाहिए। अपने व्यवसाय के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। कार्यस्थल का भौतिक और प्राकृतिक वातावरण स्वस्थ होना चाहिए। कक्षा का वातावरण ऐसा होना चाहिए जिसमें विद्यार्थी निर्भय होकर अपनी बात कह सके, शिक्षण आधिगम प्रकिया सुचारू रूप से चल सके। शिक्षक का उददेश्य केवल पाठयक्रम पूर्ण करना नहीं बल्कि पाठयक्रम को सुरूचि पूर्ण बनाकर विद्यार्थीयों तक पहुंचाना होना चाहिए।

संदर्भ

भण्डारी रविन्द्र कुमार एवं पाटिल एन.एच.(2009) महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन, एजुट्रक, पृष्ट संख्या–42–44, वाल्यूम 08, 11 जूलै 2009

जमाल साजिद (2012) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं नैतिकता पर संगठनात्मक प्रतिबध्दता का प्रभाव, स्टाफ एण्ड एज्युकेशनल डेवलपमेंट इंटरनेशनल, पृष्ठ संख्या 23–36, वाल्यूम संख्या 16, 01 मई 2012

कपूर मोनिका (2012) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, नवोदय विद्यालय एवं शासकीय विद्यालय के संदर्भ में एजुसर्च, पृष्ठ संख्या 134–136, वाल्यूम संख्या 03, 01 एप्रिल 2012

मंगल एस के (2012) शिक्षा मनोविज्ञान, पृष्ठ संख्या 275, पी एच आई लर्निंग, नई दिल्ली

मुखर्जी मीता (2005) बिलासपूर जिले के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कक्षा अध्यापन में जनतांत्रिक अभिवृत्ती का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध

डॉ सुधीर सुदाम कावरे
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपूर, छत्तीसगढ.